किताबें छूने पर अब तो नहीं डांटोगी

अनुराधा गुप्ता

मालती के यहां सोना की मां दस बरस से काम कर रही थी। उससे अपने सुख-दुख बांटती रही थी। उसकी राय लेती रही थी। एक दिन रामकली को चुप-चुप देखकर मालती से नहीं रहा गया। रामकली ने बताया कि वह सोना का ब्याह करना चाहती है और सोना है कि एकदम इंकार कर रही है।

मालती—तेरी छोरी की उम्र क्या है?

रामकली—यही कोई 11-12 बरस।

मालती (हंसकर)—तू अभी से उसका ब्याह कर देगी? पागल हो गई है क्या?

रामकली—गौना थोड़ी ही जल्दी करूंगी। रोज़-रोज़ अच्छे लड़के कहां मिले हैं।

मालती—लेकिन तुमने सोना के मन की बात पूछी। वह क्या चाहती है?

रामकली झाड़ू लगाती-लगाती रुक गई और मालती के पास आ बैठी। बोली—"उसका तो दिमाग फिर गया है। कभी कहती है डाक्टर बनेगी, कभी कहती है मास्टरनी बनेगी। सोते-सोते नींद में बड़बड़ाती है—सरकार, मेरे बापू को छोड़ दो। बापू कहां हो तुम। अब हम सच्ची गवाही कहां से लाएं?"

मालती—वह जो खेल खेलती होगी वही सपने में देखती है।

रामकली—इस सबकी जड़ में वह कोने वाला मकान है।

मालती—वह कैसे?

रामकली—मेरी बहन वहां काम करती है। उसे गांव जाना पड़ गया तो सोना को वहां एवजी काम करने भेजा। वहां उसकी उम्र की 3 छोरियां हैं। बस सारा दिन उनके संग-साथ से इसका दिमाग ही फिर गया है।

मालती—नहीं, यह बात नहीं है। वह आगे पढ़ना चाहती है। अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती है। तुम्हारी तरह झाड़ू-पोछा, बर्तनों की सफाई करके जिंदगी नहीं काटना चाहती है। तुझे तो खुश होना चाहिए। उसके रास्ते की रुकावट मत बन। तू उसे मेरे पास ले आ, मैं बात करूंगी।

रामकली—बीबी जी और जो भी बात करो, उसे काम करने से मत रोकना। दो-चार घर काम करके 250-300 लावै है। वह भी बंद हो जाएगा तो पूरा कैसे पड़ेगा।

मालती—क्यों तेरा आदमी नहीं कमाता?

रामकली—अरे, वह ढंग से कमाता होता तो रोना ही काहे का था। जो कुछ कमाता है उससे ज्यादा पी-पा कर उड़ा देता है।

× × ×

एक दिन रामकली सोना को मालती के पास ले ही आई। साफ सुथरी फ्राक पहने, बाल संवरे हुए। आकर वह मोढ़े पर बैठ गई। रामकली ने उसे ज़मीन पर बैठने को कहा तो मालती ने रोक दिया। मालती ने सोना से बातचीत की तो सोना ने बताया—मैं खूब पढ़ना-लिखना चाहती हूं। मुझे रेखा और गीता ने पढ़ना-लिखना सिखाया।

आप मां से कहकर मुझे उन्हीं के यहां भिजवा दो।

रामकली काम से निबट चुकी थी। सोना से दूसरी जगह काम पर चलने की जल्दी मचाने लगी। मालती ने कहा कि वह फिर उससे फुरसत से बात करेगी।

इत्तफ़ाक से कुछ दिन बाद ही मालती के यहां बहुत से मेहमान आ गए। मालती ने रामकली से कहकर सोना को बुलवा लिया। उसके सलीके से काम करने से मालती को बहुत अच्छा लगा। उसने रामकली से कह कर सोना को अपने पास रख लिया। अब वह वहीं रहती, काम भी करती और पढ़ने भी जाती।

रामकली तो उस ओर से निश्चिंत हो गई थी। मगर पास पड़ोस वाले चैन लेने दें तब न। हर वक्त ताने देते। "अरी रामो, क्या बेटी को बूढ़ी करके ब्याहोगी। अब तू बड़े घर वालों की बराबरी करै है।"

रामकली फिर सोना के ब्याह की बात करने आ पहुंची। मालती ने पूछा—रामकली, इस वक्त शाम को कैसे आना हुआ?

रामकली—बीबी जी, सोना के लिए एक बड़ा अच्छा रिश्ता आया है। मेरे जेठ ने बताया है। बड़े अस्पताल में दवाई बांटने का काम करै है।

मालती—सोना, तू जा धोबी के लाए कपड़े संभाल। रामकली तू फिर ब्याह की बात करने आ गई। 6 महीने में उसकी परीक्षा है। उसे अपनी मेहनत का फल तो चखने दे।

× × ×

वक्त गुजरता गया। सोना ने 12वीं कक्षा पास कर ली। मालती के बहनोई ने उसकी एक दफ्तर में नौकरी लगवा दी। उसे 600 रु० महीने मिलने लगे। सोना बहुत खुश थी। उसके घर के सब दलिद्दर दूर हो जाएंगे।

मालती ने सोना के ब्याह की बात चलाई। उसी के कारखाने में काम करने वाला एकाउंटेंट लड़का उसने सोना के लिए पसंद किया। शुभ-लगन में सोना की शादी हो गई।

रामकली सोना का ख़त मालती के पास ही पढ़वाने को लाती थी। आज भी वह सोना का खत लेकर आई। मालती ने पढ़कर सुनाया—

मेरी प्यारी मां,

कल आंटी जी का पत्र मिला। पढ़कर खुशी हुई कि एक्सीडेंट से आई चोट अब करीब-करीब ठीक हो गई है। और तुम घर में चल फिर सकती हो। शरीर जब तक चलता रहे अच्छा है।

मां, तुमने यह कैसे सोचा कि मैं आंटी जी की शिक्षा को भूल जाऊंगी। घर की मान-मर्यादा पर आंच आने दूंगी। यह परिवार भी बहुत अच्छा है। हम सब मेलजोल से रहते हैं।

मेरी एक बात मानो। समय निकाल कर पढ़ना-लिखना सीखने की कोशिश करो। भाभी को इसके लिए कभी मत रोकना। वह सिलाई-कढ़ाई सेंटर जाकर ट्रेनिंग करना चाहती हैं, उन्हें ज़रूर करने देना।

बस, अब यहीं खत्म करती हूं। सब को सादर नमस्ते। भाभी और बच्चों को प्यार।

तुम्हारी बेटी
सोना

पुनश्च—मां, बस इतना और बता दो। भैया की किताबें छूने पर अब मुझे नहीं डांटोगी न। वर्ना भाभी क्या कहेंगी?

और मालती सोना की यह बात पढ़कर हंस पड़ी। और रामकली भी। □